विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक - 28 पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, एफ-3, एमआईडीसी क्षेत्र, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई -93 अप्रैल - जून 2013

सम्पादकीय

11वीं पंचवर्षीय योजना अब जबकि समाप्त हुई है, हमें भारत सरकार द्वारा समर्थन प्राप्त महत्वाकांक्षी लक्ष्य अर्थात राष्ट्रीय विद्युत नीति के अंतर्गत वर्ष 2011 तक 'सभी के लिए विद्युत' की समीक्षा करनी होगी । 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान शुरू में लक्ष्य 78577 मेवा दिया गया था, जो बाद में अधिक यथार्थवादी बनाकर 62000 मेवा किया गया । 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान हम 53992 मेवा अर्थात संशोधित लक्ष्य के लगभग 68% रिकार्ड क्षमता संस्थापित कर सके । भारत में दिनांक 31 मार्च 2012 को कुल संस्थापित क्षमता 211766.22 मेवा थी । 12वीं पंचवर्षीय योजना में 100000 मेवा क्षमता वृद्धि की परिकल्पना की गई । इस तरह के सकारात्मक विद्युत परिदृश्य के बावजूद भारत के लगभग 65000 गाँव अभी भी अंधेरे में हैं । अत: इसीलिए भारत में विद्युत की कमी / अकाल के मामले में ध्यान देना उचित हैं । यह कहा जाता है कि केरल / देश के कुछ हिस्सों में लोगों की मृत्यु अन्न की अनुपलब्धता के कारण हुई है । लेकिन अन्न की अनुपलब्धता प्रकृति के प्रकोप से या फसल खराब होने के कारण नहीं बल्कि परिवहन, वितरण प्रणाली, प्रशासनिक / प्रक्रिया की जटीलता आदि विभिन्न अन्य कारणों की वजह से हुई । यही तथ्य भारत के विद्युत क्षेत्र पर भी लागू है । विद्युत के अकाल के लिए विभिन्न कारणों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है ।

1. पारेषण में बाधा / समस्या
2. वितरण में बाधा
3. गरीबी / भुगतान की क्षमता
4. सुनिश्चितता
5. ईंधन की कमी
6. पर्यावरण की समस्या
7. प्रशासनिक / प्रक्रिया की जटीलता

'सभी के लिए विद्युत' यह नारा यथार्थ में लाने के लिए अतिरिक्त विद्युत क्षमता के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में इन सभी पहलुओं का हल निकालने की आवश्यकता है और हम इस लक्ष्य की ओर पहुँचने का प्रयास करेंगे ।

शुभकामनाओं सहित ।

सु.द. टाकसांडे
सदस्य सचिव

राजभाषा समाचार

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 102 वीं बैठक दिनांक 19 अप्रैल 2013 को श्री सु.द.टाकसांडे, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

- अप्रैल - जून 2013 की तिमाही में दो हिन्दी कार्यशालाएँ आयोजित की गईं-

  क) दिनांक 14 मई 2013 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'लेखा कार्यों का विश्लेषण' विषय पर श्री शेष कुमार सावंत, उश्रेलिपिक ने व्याख्यान दिया । कुल 3 अधिकारी एवं 7 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।

  ख) दिनांक 20 .05.2013 को हिन्दी प्रशिक्षण से संबंधित एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली से पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा प्रबोध, प्राज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त करके मई 2013 में परीक्षा देने वाले इस कार्यालय के सभी मल्टी टॉस्किंग स्टॉफ को श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अधिकारी ने मार्गदर्शन दिया ।

- केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 21 / 23.05.2013 को आयोजित प्रबोध / प्राज्ञ परीक्षा में कार्यालय के सभी 6 एमटीएस कर्मचारियों ने भाग लिया ।

- वर्ष 2013-14 के दौरान निम्नानुसार 5 प्रोत्साहन योजनायें लागू की गई हैं :-

<u>राजभाषा विभाग के निदेशानुसार</u>

1. हिन्दी में मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना
2. हिन्दी में मूल टिप्पण आलेखन लघु प्रोत्साहन योजना

<u>कार्यालय स्तर पर तैयार की गई</u>

1. तकनीकी लेख (विद्युत दर्पण में प्रकाशित प्रोत्साहन योजना
2. कम्प्यूटर पर हिन्दी कार्य हेतु प्रोत्साहन योजना
3. हिन्दी श्रुतलेख - प्रोत्साहन योजना

******

संपादक मंडल : श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव श्रीमति तरूप्रभा शैल, सहा. निदे. (रा.भा.), श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक

मशीन युग या प्रदूषण युग

श्री दया नन्द सिंह,
कार्यपालक अभियंता

हजारों सालों से भारतीय जनता गंगा नदी को अत्यंत पावन मानकर उसकी पूजा करती आयी है । गंगा जल को इतना ज्यादा पवित्र एवं निर्मल माना जाता है कि लोग उसे एक लोटे में भरकर सील बंद करके रखते हैं । जब कभी भी परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु होती है तब इस लोटे में से, जिसे गंगा जली कहा जाता है, जल की बूंदें लेकर मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में डाली जाती हैं । आज तो इस नदी का पानी कई स्थानों में इतना दूषित हो चुका है कि उसे पीने से मृत्यु तक हो सकती है । अब गंगा पहले जैसी निर्मल नहीं रही है । हिमालय से निकल कर बंगाल की खाड़ी तक पिछले कई दशकों में अनेक नये कारखाने स्थापित हो गये हैं । इनमें से अनेक कारखानों का जहरीला कूड़ा-करकट और गंदगी इस पावन नदी में फेंका जाता है । यही बात दक्षिण भारत की पवित्र नदी कावेरी के मामले में भी सच साबित होती है । एक के बाद एक हमारी नदियाँ, कारखानों और खेतों के जहरीले रसायनों, कीट नाशक पदार्थों, कूड़ा-करकट, घास-फूस और यहाँ तक कि तेजाबों के द्वारा कबाड़ खाना बनती जा रही हैं ।

लेकिन हमारी नदियों से कहीं ज्यादा खतरा हमारी झीलों और तालाबों को है । श्रीनगर जाने वाले पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण डल और नागिन झीलें अब घास-पात और गंदगी से अटी पड़ी हैं । यह स्थिति कुछ दशक पहले नहीं थी । वर्तमान हालत की जिम्मेदारी उन हजारों पर्यटकों पर है जो इधर-उधर भ्रमण के दौरान अपनी खाने की बची हुई सामग्री इन झीलों में फेंकते हैं । यही कारण है कि इन झीलों में गंदगी भरती जा रही है । मणिपुर की लोकतक झील की दशा तो और भी खराब है । यह झील घास-पात से इतनी ज्यादा भर चुकी है कि लोग इसमें एक ओर से दूसरी ओर पैदल भी चल सकते हैं ।

इस मामले में समुद्र को भी नहीं छोड़ा गया है । दुनिया में कुल उत्पादित तेल का आधा भाग जहाजों और तेल के टैंकरों के द्वारा समुद्र मार्ग से लाया और भेजा जाता है । इनमें से एक सहस्त्रांश (प्रति हजार पीछे एक) भाग नष्ट या लीक हो जाता है । वास्तव में भारत के तीनों ओर के समुद्रों में प्रति वर्ष 10 लाख टन से ज्यादा तेल बिखर जाता है । इसका अधिकतर भाग समुद्र में ही रह जाता है । चूंकि तेल पानी में घुलता नहीं इसलिए साल दर साल यह समुद्र के जल को दूषित करते रहता है । मनुष्य के जल साधनों का प्रदूषण ही जल प्रदूषण कहलाता है ।

मानव जाति के लिए सिर्फ जल प्रदूषण की समस्या ही मुख्य समस्या नहीं है । ज्यादा खतरा तो वातावरण की विषाक्तता से है । नगरों के निवासी जिस वायु से साँस लेते हैं वह जहरीले रसायनों से इतनी ज्यादा विषाक्त है कि भारत के नगरों में दमा, खाँसी, निमोनिया, सर्दी और सिर दर्द के बीमारों की संख्या गाँवों की अपेक्षा 10 गुनी अधिक है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रदूषण पदार्थ के तीनों रूपों ठोस, तरल और गैस के रूप में हमला कर रहा है । इन सबसे परे आते आधुनिक किस्म का प्रदूषण ''शोर प्रदूषण'' है । यदि आप शहरों में रहते हैं तो गाँवों में जाकर देखिये वहाँ कितनी शांति व्याप्त है । सिर्फ मनुष्य ही नहीं पेड़ पौधे और जानवर भी प्रदूषण से प्रभावित होते हैं । यह सच है कि हम गौरवपूर्ण मशीन युग में प्रवेश कर चुके हैं । लेकिन यदि हम अपने चारों ओर के पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति सजग होते तो संभव है कि यह युग कहीं प्रदूषण के अंधकारमय युग में न बदल जाये ।

******

फिर याद उनकी आई है

श्री देवेन्द्र पाल सिंह,
कार्यपालक अभियंता

गम के अंधेरे में डूब जाता हूँ,
जब भी बजती कहीं शहनाई है ।

उनकी याद में आँसू बहाता हूँ,
मेरे साथ जिसने की बेवफाई है ।

मेरी तकदीर में अब गम के सिवा कुछ भी नहीं,
उनकी याद, उनकी तमन्ना और तन्हाई है ।

ख्वाबों का आशियाना उजाड़ दिया मेरा,
और फिर उसमें आग लगाई है ।

लोग मौत को यूँ ही बदनाम करते हैं,
हमने जिंदगी से तकलीफ पाई है ।

लोग काँटों से बचकर चलते हैं,
हमने किसी नाजुक फूल से चोट खाई है ।

तीस सालों के बाद जो देखा उनको,
सीने में एक टीस सी उभर आई है ।

खामोश निगाहों से सवालात हुए,
मुजरिम की तरह, उसने नज़र चुराई है ।

इश्क इबादत है, नफरत का यहाँ काम नहीं ,
चिंगारी बगावत की सीने में दबाई है ।

सितम सह कर भी, कयामत तक उनको चाहेंगे,
उनकी ही तस्वीर बस, इस दिल में सजाई है ।

उनकी चाहत पे नहीं है हक मेरा,
अब वो मेरी नहीं देवेन्द्र, एक चीज़ पराई है ।

अब वो पूँछते हैं हाल कैसा है ?
किसी तरह जिन्दा हूँ, बस मौत नहीं आई है ।

निमंत्रण पत्र देकर मुस्कुराये और बोले,
आना जरूर, मेरी बेटी की सगाई है ।

हमको मिटाकर, वो खुश रहें आबाद रहें,
हमने उनको दी दिल से, दुआ और बधाई है ।

अपनी बेबसी और हाले दिल किससे कहूँ ,
जिसने भी सुना हँसी उड़ाई है ।

******